भारत सरकार
आयुष मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1224
09 फरवरी, 2024 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

केरल स्थित कुरिची होमियो अस्पताल के लिए निधियां

1224. श्री कोडिकुन्नील सुरेश:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने विगत तीन वर्षों और चालू वर्ष के दौरान केरल को आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) के लिए कोई निधि आवंटित की है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;
(ग) क्या सरकार ने केरल के चेंगानासेरी स्थित कुरिची होमियो अस्पताल के अवसंरचना विकास और आधुनिकीकरण के लिए अतिरिक्त निधियां स्वीकृत की हैं;
(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;
(ङ) क्या सरकार ने कोविड-19 महामारी के विरुद्ध निवारक दवाओं का आविष्कार करने के लिए आयुर्वेद/आयुष के अंतर्गत अनुसंधान अध्ययन हेतु निधियां आवंटित की हैं; और
(च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और सरकार द्वारा इस संबंध में क्या कार्रवाई की गई है/किए जाने का विचार है?

उत्तर
आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क) और (ख): भारत सरकार केरल सहित देश में आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी (आयुष) के विकास एवं संवर्धन के लिए राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केन्द्रीय प्रायोजित योजना कार्यान्वित कर रही है। एनएएम के तहत, पिछले तीन वर्षों और चालू वर्ष के दौरान विभिन्न गतिविधियों के लिए केरल राज्य सरकार को राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) के तहत उनके प्रस्तावों के अनुसार 132.17 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता जारी की गई है।

(ग) और (घ): जन स्वास्थ्य राज्य का विषय है और तदनुसार चेंगानासेरी, केरल स्थित कुरिची होमियो अस्पताल के बुनियादी ढांचे का विकास और आधुनिकीकरण संबंधित राज्य सरकार के क्षेत्राधिकार में आता है। तथापि, एनएएम के तहत, एकल सरकारी आयुष अस्पतालों के उन्नयन के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों को वित्तीय सहायता देने का प्रावधान है। वर्ष 2018-19 के दौरान एसएएपी के माध्यम से केरल राज्य सरकार से प्राप्त प्रस्ताव के अनुसार, सरकारी होम्यो अस्पताल कुरिची के उन्नयन के लिए 75.00 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई है।

(ङ) और (च): जी हां, ब्यौरे निम्नानुसार हैं:

I. केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) ने देश भर में कंटेनमेंट जोन में रहने वाले उच्च जोखिम वाले लोगों और उच्च जोखिम वाले स्वास्थ्य कर्मियों तथा व्यक्तियों में कोविड-19 के रोगनिरोध के लिए आयुर्वेदिक उपचार पर नैदानिक अध्ययन किया है। सीसीआरएएस द्वारा किए गए अध्ययनों का ब्यौरा **संलग्नक-I** में दिया गया है। इंडेक्स्ड मेडिकल जर्नल्स में इन अध्ययनों के शोध

परिणामों से कुल पांच शोध लेख प्रकाशित किए गए हैं। आयुष मंत्रालय ने इन शोध अध्ययनों के परिणामों के आधार पर कोविड-19 के प्रबंधन के लिए आयुर्वेद और योग पर राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल जारी किया है, जिसमें आयुर्वेद के जरिए कोविड-19 के रोगनिरोध के लिए दिशानिर्देश भी शामिल हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली को अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के साथ आयुर्वेद के जरिए कोविड-19 के शमन पर अंतर्राष्ट्रीय नैदानिक परीक्षण करने के लिए 9,30,12,397 रुपये जारी किए गए हैं।

II. केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) ने कोविड-19 संक्रमण की रोकथाम के लिए अनुसंधान अध्ययन किए हैं और साथ ही कोविड-19 महामारी के खिलाफ निवारक होम्योपैथिक दवा वितरित की है। सीसीआरएच द्वारा किए गए अध्ययनों का ब्यौरा **संलग्नक-II** में दिया गया है।

III. केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम) ने कोविड-19 के रोगनिरोधी के रूप में यूनानी चिकित्सा के मूल्यांकन के लिए दो अध्ययन किए हैं।

IV. राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस) द्वारा कोविड-19 के लिए सिद्ध दवाओं की प्रभावकारिता के संबंध में अध्ययन करने के लिए 50.00 लाख रुपए की राशि निर्धारित की गई थी। अध्ययनों ने कोविड-19 से निपटने में सिद्ध दवाओं की प्रभावकारिता साबित की है और तीन शोध पत्र प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए हैं।

*****

संलग्नक-I

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) द्वारा किए गए अध्ययनों का ब्यौरा

क्र.सं.	**कोविड-19 के रोगनिरोध के लिए सीसीआरएएस द्वारा किए गए अध्ययन**	**अध्ययन केंद्र**	**अध्ययन बजट (धनराशि रुपये में)**
1.	स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों में कोविड-19 की रोकथाम में आयुर्वेदिक रसायन (च्यवनप्राश) की सुरक्षात्मक क्षमता का मूल्यांकन - एक ओपन लेबल, प्रोस्पेक्टिव रैंडोमाइज्ड कंट्रोल्ड पैरालेल समूह अध्ययन	चौधरी ब्रह्म प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान (सीबीपीएसीएस), नई दिल्ली	41,50,000/-
2.	स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों में कोविड-19 महामारी की रोकथाम में आयुर्वेदिक उपचार (च्यवनप्राश) की प्रभावकारिता का मूल्यांकन-एक ओपन लेबल सिंगल आर्म प्रोस्पेक्टिव अध्ययन।	आयुर्वेद एवं यूनानी तिब्बिया कॉलेज, नई दिल्ली	18,98,200/-
3.	दिल्ली के चिन्हित कंटेनमेंट क्षेत्रों में कोविड-19 के संक्रमण की रोकथाम में आयुर्वेदिक उपचारों का प्रभाव।	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (सीएआरआई), नई दिल्ली	1,99,00,000/-
4.	कोविड-19 के संपर्क में आने वाली उच्च जोखिम वाले लोगों (स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ताओं/कंटेनमेंट जोन में रहने वाली आबादी) के बीच रोगनिरोधी उपाय के रूप में गुडूची घन वटी/सुदर्शन घन वटी के प्रभाव पर एक प्रोस्पेक्टिव नॉन-रैंडोमाइज्ड ओपन लेबल कंट्रोल्ड इंटरवेंशनल अध्ययन।	15 सीसीआरएएस संस्थान	1,50,39,008/-
5.	हिमाचल प्रदेश के कंटेनमेंट क्षेत्रों में आयुर्वेदिक उपचार (गुडूची घन वटी) का प्रभाव- एक समुदाय आधारित अध्ययन	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (आरएआरआई), मंडी	शून्य
6.	कोविड-19 के खिलाफ रोगनिरोध में अश्वगंधा और उच्च जोखिम वाले स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ताओं के सामान्य स्वास्थ्य पर इसके लाभ का अध्ययन: हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन सल्फेट (एचसीक्यूएस) के साथ रैंडोमाइज्ड कंट्रोल्ड तुलना।	(i) दत्ता मेघे इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (डीएमआईएमएस), वर्धा (ii) केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (सीएआरआई), मुंबई (iii) श्री धर्मस्थल मंजूनाथेश्वर (एसडीएम) कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एंड हॉस्पिटल, हसन	1,98,70,711/-

7.	कोविड-19 की महामारी में रोगनिरोधी उपाय के रूप में आयुर्वेदिक उपचार (आयुर्वेद रक्षा किट) के प्रभाव पर एक प्रोस्पेक्टिव ओपन लेबल कंट्रोल्ड इंटरवेंशनल अध्ययन - केवल समुदाय आधारित अध्ययन।	अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) योजना के तहत 20 सीसीआरएएस संस्थानों के माध्यम से	13,60,99,618/-
8.	कोविड-19 के खिलाफ टीका लगाए गए प्रतिभागियों में अश्वगंधा के प्रयोग पर सुरक्षा, इम्युनोजेनेसिटी और बचाव संबंधी अध्ययन: एक रेंडोमाइज्ड, डबल-ब्लाइंड, प्लेसबो-कंट्रोल्ड, मल्टी-सेंट्रिक नैदानिक परीक्षण।	(i) अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली (ii) राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर (iii) श्री धर्मस्थल मंजूनाथेश्वर (एसडीएम) कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एंड हॉस्पिटल, हसन (iv) सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय (एसपीपीयू), पुणे (v) पोदार आयुर्वेदिक कॉलेज, मुंबई (vi) दत्ता मेघे इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (डीएमआईएमएस), नागपुर (vii) श्री बीएम कंकनवाड़ी आयुर्वेद (बीएमकेए) महाविद्यालय, बेलगाम	12,81,33,213/-
9.	स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों में कोविड-19 टीकाकरण के बाद च्यवनप्राश के प्रयोग का इम्युनोजेनेसिटी पर प्रभाव - एक ओपन-लेबल, प्रोस्पेक्टिव रेंडोमाइज्ड कंट्रोल्ड अध्ययन।	दत्ता मेघे इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, वर्धा	29,09,067/-
10.	कोविड-19 में आयुरक्षा किट के प्रभाव का आकलन करने के लिए एक रोगनिरोधी समुदाय आधारित अध्ययन।	अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत 12 सीसीआरएएस संस्थान	67,37,040/-
11.	कोविड-19 में आयुरक्षा किट के प्रभाव पर समुदाय आधारित रोगनिरोधी अध्ययन।	जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी) के तहत 13 सीसीआरएएस संस्थान	1,91,30,000/-
12.	कोविड-19 के संपर्क में आने वाली उच्च जोखिम वाली आबादी (स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता/कंटेनमेंट जोन में रहने वाले लोग) में रोगनिरोधी उपाय के रूप में अश्वगंधा (*विथानिया सोम्नीफेरा*) के प्रभाव पर एक प्रोस्पेक्टिव नॉन-रेंडोमाइज्ड ओपन लेबल्ड कंट्रोल्ड	नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन मेडिकल हेरिटेज (एनआईआईएमएच), हैदराबाद	शून्य

	इंटरवेंशनल अध्ययन।		
13.	कोविड-19 के संपर्क में आने वाली उच्च जोखिम वाली आबादी (स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता/कंटेनमेंट जोन में रहने वाले लोग) में रोगनिरोधी उपाय के रूप में गुडूची (*टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया*) के प्रभाव पर एक प्रोस्पेक्टिव नॉन-रैंडोमाइज्ड ओपन लेबल्ड कंट्रोल्ड इंटरवेंशनल अध्ययन।	एनआईआईएमएच, हैदराबाद	शून्य
14.	कोविड-19 के संपर्क में आने वाली उच्च जोखिम वाली आबादी (स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता/कंटेनमेंट ज़ोन में रहने वाले लोग) में रोगनिरोधी उपाय के रूप में च्यवनप्राश लेहयम के प्रभाव पर प्रोस्पेक्टिव नॉन-रैंडोमाइज्ड ओपन लेबल्ड कंट्रोल्ड इंटरवेंशनल अध्ययन।	एनआईआईएमएच, हैदराबाद	शून्य
15.	कोविड-19 सुविधाओं के आसपास के क्षेत्र में पुलिस कर्मियों में रोगनिरोधी उपाय के रूप में आयुर्वेदिक रक्षा किट (च्यवनप्राश, समशमनी वटी और हरीतकी) के प्रभाव पर प्रोस्पेक्टिव नॉन-रैंडोमाइज्ड ओपन लेबल कंट्रोल इंटरवेंशनल अध्ययन।	एनआईआईएमएच, हैदराबाद	शून्य
16.	कोविड-19 सुविधाओं के आसपास काम कर रहे आयुष स्वास्थ्य कर्मियों के बीच रोगनिरोधी उपाय के रूप में आयुर्वेदिक रक्षा किट-1 (आयुष 64, समशमनी वटी और च्यवनप्राश) के प्रभाव पर प्रोस्पेक्टिव नॉन-रैंडोमाइज्ड ओपन लेबल कंट्रोल इंटरवेंशनल अध्ययन।	एनआईआईएमएच, हैदराबाद	शून्य
		कुल	**35,38,66,857/-**

संलग्नक-II

केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) द्वारा किए गए अध्ययनों का विवरण:

- दिल्ली के कंटेनमेंट जोन में रहने वाले व्यक्तियों में कोविड-19 की रोकथाम में आर्सेनिकम एल्बम 30सी की प्रभावशीलता - एक प्रोस्पेक्टिव, समुदाय-आधारित, पैरालेल कोहार्ट अध्ययन। यह अध्ययन कोविड-19 के खिलाफ आर्सेनिकम एल्बम 30सी के सुरक्षात्मक प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए किया गया था और इसमें दिल्ली के 11 कोविड-19 कंटेनमेंट जोन में रहने वाले 10,180 प्रतिभागियों को शामिल किया गया था।

- कंटेनमेंट जोन में रहने वाले व्यक्तियों में कोविड-19 की रोकथाम में आर्सेनिकम एल्बम 30सी की प्रभावकारिता - एक प्रोस्पेक्टिव, मल्टी-सेंटर, क्लस्टर-रेंडोमाइज्ड, पैरालेल आर्म, समुदाय आधारित, ओपन-लेबल अध्ययन। यह एक प्रोस्पेक्टिव, मल्टी-सेंटर, क्लस्टर- रेंडोमाइज्ड, पैरालेल आर्म, समुदाय-आधारित, ओपन-लेबल अध्ययन था, जिसमें भारत के 7 शहरों के कंटेनमेंट क्षेत्रों (42 क्लस्टरों) में रहने वाले 32,186 स्पष्ट रूप से स्वस्थ व्यक्ति शामिल किए गए थे।

- 2020 में कोविड-19 के लिए होम्योपैथिक दवा आर्सेनिकम एल्बम 30सी: मास-लेबल डेटा से एक पूर्वव्यापी विश्लेषण। मास-लेबल डेटा के महत्व और जन-स्वास्थ्य देखभाल निर्णयों पर उनके संभावित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, परिषद ने महीनों से विभिन्न कॉलेजों से व्यक्तियों के पोस्ट-प्रोफाइलेक्टिक कंजम्पशन डेटा एकत्र किए, जिससे एक डेटा पूल सृजि किया गया।

- गैर-संचारी रोग वाले रोगियों पर कोविड-19 महामारी का प्रभाव और प्रबंधन: कृष्णा और दार्जिलिंग जिले के आयुष एलएसडी क्लीनिक में एक क्रॉस सेक्शनल अध्ययन। इस अध्ययन का उद्देश्य एनसीडी से पीड़ित रोगियों में कोविड-19 के प्रभाव को उनके ज्ञान, जागरूकता, कोविड-19 के बारे में धारणा, आयुष प्रतिरक्षा बूस्टर (एआईबी) के उपयोग और महामारी के दौरान क्रोनिक कंडिशन के प्रबंधन के संदर्भ में निर्धारित करना था।

- कोविड-19 पॉजिटिव रोगियों में रोगनिरोधी आयुष उपचार और रोग परिणाम के बीच संबंध: एक पूर्वव्यापी कोहोर्ट अध्ययन। यह रिट्रोस्पेक्टिव, मल्टी-सेंट्रिक, कोहोर्ट अध्ययन भारत के 17 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के 21 शहरों में रहने वाले कोविड-19 से उबर चुके रोगियों में किया गया ताकि आयुष उपचारों को बढ़ावा देने वाली घोषित प्रतिरक्षा के उपयोग और जागरूकता के बारे में जानकारी एकत्र की जा सके और इन प्रभावित रोगियों में क्लिनिकल कोर्स/रोग की गंभीरता के साथ इसके संबंध का पता लगाया जा सके।